ग) वह आग का दुरुपयोग करके आत्महत्या करने जैसा कदम उठा लेती है।

घ) वह कमज़ोर दिखती है जिसकी कमज़ोरी का अनुचित फायदा दूसरे उठाते हैं।

उ० ख) (प्रश्न नीचे लिखा है आप पहले प्रश्न लिखें ↓) 'कन्यादान' कविता में माँ द्वारा जो सीख दी गई है वह उसके अनुभव की उपज है। माँ को दुनियादारी और ससुराल वालों द्वारा किए गए व्यवहार का अनुभव है। उन्हें ध्यान में रखकर भावी जीवन के लिए सीख देती है। आज जब समाज में छल-कपट, शोषण दहेज प्रथा आदि बुराइयाँ बढ़ी हैं तथा ससुराल में अधिक सजग रहने की ज़रूरत बढ़ गई है तब माँ द्वारा बेटी को दी गई सीख की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

प्र० ख) 'कन्यादान' कविता में माँ द्वारा जो सीख दी गई है, वे वर्तमान परिस्थितियों में कितनी प्रासंगिक है, स्पष्ट कीजिए।

प्र० ग) 'कन्यादान' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

उ० → 'कन्यादान' कविता में माँ द्वारा बेटी को स्त्री के परंपरागत 'आदर्श' रूप से हटकर सीख दी गई है। कवि का मानना है कि सामाजिक-व्यवस्था द्वारा स्त्रियों के आचरण संबंधी जो प्रतिमान गढ़ लिए जाते हैं वे आदर्श होकर भी बंधन होते हैं। 'कोमलता' में कमज़ोरी का उपहास, लड़की जैसा न दिखाई देने में आदर्श का प्रतिकार है। माँ की बेटी से निकटता

Scanned with CamScanner

के कारण उसे अंतिम पूँजी कहा गया है। इस कविता में माँ की कोरी भावुकता नहीं, बल्कि माँ के संचित अनुभवों की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है।

पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर :

सं - 1 कितना प्रामाणिक ..... पंक्तियों की।

प्र० 1. माँ का कौन-सा दुख प्रामाणिक था ? कैसे ?

उ०→ माँ के लिए उसकी बेटी के विवाह अवसर पर अपनी बेटी की विदाई के समय हृदय में उठने वाला दुख प्रामाणिक था क्योंकि एक तो उसकी बेटी सयानी नहीं थी तथा उसे गृहस्थी के दुखों का ज्ञान नहीं था। वह भोली थी और माँ के लिए अंतिम पूँजी के समान थी जो उससे विदा हो रही थी।

प्र-2. कवि और कविता का नाम लिखिए।

उ० - कवि - ऋतुराज
कविता - कन्यादान

सं-2. माँ ने ----------- मत देना।

प्र-1. माँ ने किसे अपने चेहरे पर रीझने से मना किया और क्यों ?

Scanned with CamScanner

उ०- माँ ने अपनी बेटी को अपने चेहरे पर रीझने से मना किया जिससे समाज उसके पीछे छिपी दुर्बलताओं का उपहास न कर सके।

प्र-2 वस्त्र और आभूषण को बंधन क्यों कहा गया है?

उ०-
नई बहुएँ नए-नए वस्त्र और गहने पाकर बहुत खुश रहती हैं। इस खुशी में वे मानसिक रूप से हर बंधन स्वीकार कर लेती हैं। वे थोड़े से गहनों और कपड़ों के बदले अपनी मूल्यवान आज़ादी खो बैठती हैं।

शिल्प-सौंदर्य :

भाषा :- संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली
रस :- वात्सल्य रस
छंद :- मुक्त छंद
काल :- आधुनिक काल
अलंकार :-
"लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो।"
= उपमा अलंकार

Scanned with CamScanner